



तीर्थयात्रा (कहानी)



अध्ययन से पूर्व



कहानी का मूल तत्व

अपने सुख का त्याग कर दूसरे के दुख को सुख में परिवर्तित करना ही जीवन का सच्चा सुख है।



हेमराज लाजवंती का एकमात्र सहारा था। उसका मुँह देखकर वह अपने सारे दुःख भूल जाती थी। इससे पहले उसके कई पुत्र पैदा हुए, मगर सब-के-सब बचपन में ही मर गए। यद्यपि हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों-सा ही था, मगर लाजवंती की आँखों में वैसा बालक सारे संसार में न था। माँ की ममता ने उसकी आँखों को धोखे में डाल दिया था। लाजवंती को उसकी इतनी चिंता थी कि दिन-रात उसे छाती से लगाए रहती थी। मानो वह दीपक हो, जिसे बुझाने के लिए हवा के तेज़ झोंके बार-बार आक्रमण कर रहे हों। वह उसे छिपा-छिपाकर रखती थी कि कहीं उसे किसी की नज़र न लग जाए। गाँव के लड़के प्रायः खेतों में खेलते-फिरते थे, मगर लाजवंती हेमराज को घर से बाहर न निकलने देती थी और अगर कभी वह निकल भी जाता, तो घबराकर उसे ढूँढ़ने लग जाती थी।

गाँव की स्त्रियाँ कहतीं, “हमारे भी तो बच्चे हैं। तू ज़रा-ज़रा सी बात में यों पागल क्यों हो जाती है?” लाजवंती यह सुनती, तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगते। भर्राए हुए स्वर में उत्तर देती, “क्या कहूँ? मेरा जी डर जाता है।”

मगर इतना सावधान रहने पर भी हेमराज बुरी नज़र से न बच सका। प्रातःकाल था, लाजवंती दूध दुह रही थी। इतने में हेमराज जागा और जागते ही मुँह फुलाकर बोला, “माँ!”

आवाज़ में उदासी थी, लाजवंती के हाथ से बरतन गिर गया। दौड़ती हुई हेमराज के पास पहुँची और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली, “क्यों हेम! क्या है बेटा? इतना घबराया हुआ क्यों है तू? इस तरह क्यों बोलता है।”

हेमराज की आँखों में आँसू डबडबा आए, रुक-रुककर बोला, “सिर में दर्द हो रहा है, बहुत तेज़ दर्द है।”

बात साधारण थी, मगर लाजवंती का नारी-हृदय काँप गया। यही दिन थे, यही ऋतु थी, जब उसका पहला पुत्र मदन मरा था। वह भी इसी तरह बीमार हुआ था।

लाजवंती को अपने पैरों के नीचे से धरती खिसकती-सी मालूम होने लगी। जिस तरह विद्यार्थी एक बार फ़ेल होकर दूसरी बार परीक्षा में बैठते समय घबराता है, उसी प्रकार हेमराज के सिरदर्द से लाजवंती व्याकुल हो गई।

गाँव में दुर्गादास वैद्य अच्छे अनुभवी वैद्य थे। लोग उन्हें ‘लुकमान’ समझते थे। सैकड़ों रोगी उनके हाथों से स्वस्थ होते थे। आस-पास के गाँवों में भी उनका बड़ा नाम था। लाजवंती को देखकर उन्होंने पात्र हाथ से रख दिया और आँखों से ऐनक उतारकर बोले, “क्यों बेटा! क्या बात है?”

लाजवंती ने चिंतित होकर उत्तर दिया, “हेम बीमार है।”

वैद्य जी ने सहानुभूति के साथ पूछा, “कब से?”

“आज ही से। कहता है, सिर में दर्द है।”

“बुखार तो नहीं है?”

“मालूम तो नहीं होता। आप चलकर देख लेते, तो अच्छा होता।”

वैद्य जी का मनोरथ सिद्ध हुआ। उन्होंने जल्दी से कपड़े बदले और लाजवंती के साथ चल दिए। जाकर देखा, तो हेमराज बुखार से बेसुध पड़ा था। वैद्य जी ने नाड़ी देखी, माथे पर हाथ रखा और फिर कहा, “चिंता



की कोई बात नहीं। दवा देता हूँ, बुखार उतर जाएगा।”

लाजवन्ती के डूबे हुए हृदय को सहारा मिल गया। उसने दुपट्टे के आँचल से अठन्नी निकाली और वैद्य जी को भेंटकर दी। वैद्य जी ने मुँह से ‘नहीं-नहीं’ कहा, मगर हाथों ने मुँह का साथ न दिया। उन्होंने पैसे ले लिए।

कई दिन बीत गए, हेमराज का बुखार नहीं उतरा। वैद्य जी ने कई दवाईयाँ बदली, परंतु किसी ने अपना असर न दिखाया। लाजवन्ती की चिंता बढ़ने लगी। वह रात-रात भर उसके सिरहाने

बैठी रहती थी। लोग आते और धीरज दे-देकर चले जाते थे, परंतु लाजवन्ती का मन उनकी बातों की ओर न दौड़ता था। वह डरी-डरी रहती और अपने मन की पूरी शक्ति से हेम की सेवा में लगी रहती थी।

एक दिन उसने वैद्य से पूछा, “हकीम जी! आखिर क्या बात है, जो यह बुखार उतरने का नाम नहीं लेता?” वैद्य जी ने उत्तर दिया, “मियादी बुखार है।”

लाजवन्ती चौंक पड़ी। उसने तड़पकर पूछा, “मियादी बुखार क्या?”

“अपनी मियाद पूरी करके उतरेगा।”

“पर कब तक उतरेगा?”

“इक्कीसवें दिन उतरेगा, इससे पहले नहीं उतर सकता।”

“आज ग्यारह दिन तो हो गए हैं।”

“बस दस दिन और हैं। किसी तरह ये दिन निकाल दो, भगवान भला करेगा।”

लाजवन्ती का माथा ठनका। हिचकिचाते हुए बोली, “कोई अंदेशा तो नहीं? सच-सच बता दीजिए।”

वैद्य जी थोड़ी देर चुप रहे। इस समय वे सोच रहे थे कि उसे सच-सच बताएँ या न बताएँ? अंत में बोले, “देखो! बुखार सख्त है, हानिकारक भी हो सकता है। मेरी राय में तो हेम के पिता को बुलवा लो तुम।”

लाजवन्ती सहम गई। रेत के स्थलों को मीठे जल की नदी समझ कर जब हिरण पास पहुँचकर देखता है कि नदी अभी तक उतनी ही दूर है, तो जो दशा उसके मन की होती है, वही दशा इस समय लाजवन्ती की हुई। उसे आशा नहीं, निश्चय हो गया था कि हेम एक-आध दिन में ठीक हो जाएगा। फिर उसी तरह खेलता



फिरेगा, फिर उसी तरह नाचता फिरेगा। माँ देखेगी, खुश होगी। लोग बधाइयाँ देंगे। मगर वैद्य की बात सुनकर उसका दिल बैठ गया। आशा के साथ निराशा भी सामने आकर खड़ी हो गई।

उसका पति रामलाल मुल्तान में नौकर था। उसने उसे तार भेजा, वह तीसरे दिन पहुँच गया। इलाज दुगनी सावधानी से होने लगा। यहाँ तक कि दस दिन और भी बीत गए। अब इक्कीसवाँ दिन सिर पर था। हेम की देह अभी तक आग की तरह तप रही थी। लाजवन्ती और रामलाल दोनों घबरा गए। सोचने लगे, “क्या बुखार एकाएक उतरेगा?”

वैद्य ने आकर नाड़ी देखी, तो घबराकर बोले, “आज की रात बड़ी भयानक है। सावधान रहना, बुखार एकाएक उतरेगा।”

लाजवन्ती और रामलाल दोनों के प्राण सूख गए। वैद्य के शब्द किसी आने वाले भय की पूर्व सूचना थे। रामलाल दवाएँ सँभालकर बेटे के सिरहाने बैठ गया परंतु लाजवन्ती के हृदय को चैन न था। उसने संध्या समय थाल में घी के दीपक जलाए और मंदिर की ओर चली। इस समय उसे आशा अपनी पूरी जीवन-शक्ति के साथ सामने नाच करती हुई दिखाई दी। लाजवन्ती मंदिर पहुँची और देवी के सामने देर तक रोती रही। जब थककर उसने सिर उठाया, तो उसका मुख-मंडल शांत था; जैसे— तूफ़ान शांत हो जाता है। उसे ऐसा लगा मानो कोई दिव्य शक्ति उसके कान में कह रही है— ‘तूने आँसू बहाकर देवी के पाषाण हृदय को मोम कर लिया है।’ लाजवन्ती ने देवी की आरती उतारी, फूल चढ़ाए, मंदिर की परिक्रमा की और प्रेम के बोझ से काँपते हुए स्वर से मनौती मानी, “देवी माता! मेरा हेम बच जाए तो मैं तीर्थ-यात्रा करूँगी!”

यह मनौती मानने के बाद लाजवन्ती को ऐसा जान पड़ा, जैसे उसके दिल पर से किसी ने कोई बोझ हटा दिया है, जैसे उसका संकट टल गया है। वह निश्चित हो गई कि अब उसके हेम को कोई भय नहीं है। लौटी, तो उसके पाँव ज़मीन पर न पड़ते थे। उसके हृदय-सागर में आनंद की तरंगें उठ रही थीं। वह दौड़ती हुई घर पहुँची तो पति ने कहा, “लो बधाई हो! तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया। बुखार धीरे-धीरे उतर रहा है।”

लाजवन्ती के मुख पर प्रसन्नता थी और आँखों में आशा की झलक। झूमती हुई बोली, “अब हेम को कोई डर नहीं है। मैं तीर्थ-यात्रा की मनौती मान आई हूँ।”

रामलाल ने तीर्थ-यात्रा के खर्च का अनुमान किया, तो हृदय बैठ गया परंतु पुत्र-स्नेह ने इस चिंता को देर तक न ठहरने दिया। उत्तर दिया, “अच्छा किया! रुपए का क्या है, हाथ का मैल है, आता है, चला जाता है। परमेश्वर ने एक लाल दिया है, वह जीता रहे। यही हमारी दौलत है।”

लाजवन्ती ने स्वामी को सुला दिया और आप रात भर जागती रही।

प्रभात हुई, तो हेम का बुखार बिल्कुल उतर गया था। लाजवन्ती के मुख-मंडल से प्रसन्नता टपक रही थी; जैसे— “संध्या के समय गौओं के स्तनों से दूध की बूँदें टपकने लगती हैं।”

वैद्य जी ने आकर देखा, तो उनका मुँह भी चमक उठा। अभिमान से सिर उठाकर बोले, “अब कोई चिंता नहीं। तुम्हारा बच्चा बच गया।”

लाजवन्ती ने हेम की कमज़ोर देह पर हाथ फेरते हुए कहा, “क्या से क्या हो गया!” वैद्य ने लाजवन्ती की ओर देखा और रामलाल से बोले, “यह सब इसी के परिश्रम का फल है।”



लाजवन्ती ने उत्तर दिया, “देवी माता की कृपा है।”

“मैं तुम्हें दूसरी सावित्री समझता हूँ। उसने मरे हुए पति को ज़िंदा किया था, तुमने पुत्र को मृत्यु के मुँह से निकाला है। तुम यदि दिन-रात एक न कर देती, तो हेम का बचना असंभव था। यह सब तुम्हारी मेहनत का फल है। बच्चा बचा नहीं, दूसरी बार पैदा हुआ है।”

रामलाल के होठों पर मुस्कुराहट थी, आँखों में चमक। उसके सातवें दिन वे अपनी नौकरी पर चले गए और कहते गए कि तीर्थ-यात्रा की तैयारी करो।

तीन महीने बीत गए। लाजवन्ती तीर्थ-यात्रा के लिए तैयार हुई। अब उसके मुख पर फिर वही आभा थी, आँखों में फिर वही चमक, दिल में फिर वही खुशी। हेम आँगन में इस तरह चहकता फिरता था जैसे- फूलों पर बुलबुल चहकती है। लाजवन्ती उसे देखती, तो फूली न समाती थी।

तीर्थ-यात्रा पर जाने से पहले की रात उसके आँगन में सारा गाँव इकट्ठा हो रहा था। झाँझें और करतालें बज रही थीं। ढोलक की थाप गूँज रही थीं। स्त्रियाँ गाती थीं, बजाती थीं, शोर मचाती थीं। दूसरी तरफ़ कहीं पूड़ियाँ बन रही थीं, कहीं हलुवा। उनकी सुगंध से दिमाग तर हुए जाते थे। लाजवन्ती इधर-से-उधर दौड़ी फिरती थी, मानो उसके यहाँ ब्याह हो।

लोग खा-पीकर आराम करने लगे। जो बचा हुआ था, वह गरीबों में बाँट दिया गया। लाजवन्ती ने लोगों को विदा किया और चलने की तैयारी में लगी। उसने टीन के एक बक्से में ज़रूरी कपड़े रखे, एक बिस्तर तैयार किया, गले में लाल रंग की सूती माला पहनी, माथे पर चंदन का लेप किया। गऊ एक पड़ोसन को सौंपी और उससे बार-बार कहा, “इसका पूरा-पूरा ध्यान रखना। मैं जा रही हूँ, मगर मेरा मन अपनी गऊ में रहेगा।” सहसा किसी की सिसकी भरने की आवाज़ सुनाई दी। लाजवन्ती के कान खड़े हो गए। उसने चारों तरफ़ देखा, मगर कोई दिखाई न दिया। इस समय सारा गाँव सुख-स्वप्न में बेसुध पड़ा था। इस समय यह सिसकी भरने वाला कौन है? यह सोचकर लाजवन्ती हैरान रह गई। वह आँगन में निकल आई और ध्यान से सुनने लगी। सिसकी की आवाज़ फिर सुनाई दी।

लाजवन्ती छत पर चढ़ गई और पड़ोसन के आँगन में झुककर ज़ोर से बोली, “माँ, हरो!”

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। फिर एक चारपाई पर से उत्तर मिला, “कौन है? लाजवन्ती?” आवाज़ में आँसू मिले हुए थे।

लाजवन्ती जल्दी से नीचे उतर गई और हरो के पास पहुँचकर बोली, “माँ, क्या बात है? तू रो क्यों रही है?” हरो सचमुच रो रही थी परंतु अपना रोना लाजवन्ती के सामने कहते हुए उसके नारी-दर्प को बट्टा लगता, इसलिए अपनी वास्तविक अवस्था को छिपाती हुई बोली, “कोई बात नहीं है।”

“तू रो क्यों रही है?”

हरो के रुके हुए आँसुओं का बाँध टूट गया।

लाजवन्ती ने फिर पूछा, “अरी! बात क्या है, जो तू इस समय रो रही है? मैं तेरी पड़ोसन हूँ, मुझसे मत छिपा।” हरो ने कुछ उत्तर न दिया। वह सोच रही थी कि इसे बताऊँ या न बताऊँ, प्रभात हो चला था, कुछ-कुछ प्रकाश निकल आया था। लाजवन्ती चलने के लिए आतुर हो रही थी। मगर हरो को क्या दुःख है, यह जाने



बिना चले जाना उसके लिए कठिन था। उसने तीसरी बार फिर पूछा, “माँ, बता दो ना, तुम्हें क्या दुःख है?”

हरो ने दुःखी होकर पूछा, “क्या तुम उसे दूर कर दोगी?”

“हो सका, तो जरूर कर दूँगी।”

“यह असंभव है।”

“संसार में असंभव कोई बात नहीं। भगवान सब कुछ कर सकता है।”

हरो थोड़ी देर तक चुप रही, फिर धीरे-से बोली, “कुँवारी-बेटी का दुःख खा रहा है। रात-रात भर रोती रहती हूँ। जाने, यह नाव कैसे पार लगेगी?”

“यह क्यों? उसके ब्याह का खर्च तो तुम्हारे जेठ ने देना मंजूर कर लिया है।”

“ऐसे भाग होते, तो रोना काहे का था? ”

लाजवंती ने अकुलाकर पूछा, “तो क्या यह झूठ है?”

“बिल्कुल झूठ भी नहीं। उसने दो सौ रुपए के गहने-कपड़े बनवा दिए हैं, मगर मिठाई आदि का प्रबंध नहीं किया। अब चिंता यह है कि बारात आएगी तो उसके सामने क्या धरूँगी, बाराती मिठाई माँगेंगे, पूड़ियाँ माँगेंगे, हलवा माँगेंगे। यहाँ सत्तू खिलाने की भी हिम्मत नहीं। यह सोच-सोचकर सूखती जाती हूँ।”

लाजवंती ने कुछ सोचकर उत्तर दिया, “क्या गाँव के लोग एक गरीब कन्या का ब्याह नहीं कर सकते और यह उनकी दया न होगी, उनका धर्म होगा।”

हरो की आँखें भर आईं। वह इस समय गरीब थी, परंतु कभी उसने अच्छे दिन भी देखे थे। लाजवंती के



प्रस्ताव से दुःख हुआ; जैसे- नया-नया भिखारी गालियाँ सुनकर ज़मीन में गड़ जाता है। उसने धीरे-से कहा, “बेटी! मुझसे भी तो यह अपमान न देखा जाएगा।”

“परंतु इस तरह तो गाँवभर की नाक कट जाएगी।” हरो ने बात काटकर कहा।

“मैं भी तो इसे सहन नहीं कर सकूँगी। किसी के सामने हाथ फैलाना भी तो बुरा है।”

“तो क्या करोगी? कन्या कुँवारी बैठाए रखोगी?”

“भगवान की यही इच्छा है, तो मेरा क्या बस है? उसे लेकर कहीं निकल जाऊँगी। न कोई देखेगा, न कोई बात करेगा।”

लाजवंती हरो की अवस्था देखकर काँप गई। उसे ऐसा लगा जैसे कोई कह रहा है कि अगर यह हो गया, तो ईश्वर का कोप गाँवभर को जलाकर राख कर देगा। लाजवंती अपने-आपको भूल गई। उसका हृदय दुःख से पानी-पानी हो गया! उसने जोश में कहा, “चिंता न करो, तुम्हारा संकट मैं दूर करूँगी। तेरी बेटी का ब्याह होगा और बारात के लोगों को भोजन मिलेगा। तेरी बेटी, तेरी ही बेटी नहीं, मेरी भी है।”

हरो ने वह सुना, जिसकी उसे इच्छा थी, परंतु आशा न थी। उसकी आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलकने लगे। लाजवंती तीर्थ-यात्रा के लिए अधीर हो रही थी। वह सोचती थी— हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन के मंदिरों को देखकर हृदय कली की तरह खिल जाएगा। मगर जो आनंद उसे इस समय प्राप्त हुआ, वह उस कल्पित आनंद की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़-चढ़कर था। वह दौड़ती हुई अपने घर गई और संदूक से दो सौ रुपए लाकर हरो के सामने ढेर कर दिए। यह रुपए जमा करते समय वह प्रसन्न हुई थी, पर इस समय वह उससे भी अधिक प्रसन्न हुई। जो सुख त्याग में है, वह ग्रहण में कहाँ?

—सुदर्शन

शब्दार्थ

पाषाण = पत्थर

अंदेशा = संदेह

आक्रमण = हमला

संकट = दुःख

परिक्रमा = चक्कर लगाना

व्याकुल = बेचैन

वास्तविक = सच्ची बात

कृतज्ञता = आभार प्रकट करना



उच्चारण करें

प्रसन्नता

स्नेह

परमेश्वर

मुस्कुराहट

तीर्थ-यात्रा

स्वप्न

असंभव

हिम्मत



शिक्षण संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका कहानी के माध्यम से बच्चों को संवेदनशीलता और त्याग जैसी भावनाओं से परिचित करवाएँ।



अभ्यास कार्य



जरा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

- (क) लाजवंती का किसके प्रति अधिक लगाव था?
- (ख) लाजवंती ने तीर्थयात्रा का निश्चय क्यों किया?
- (ग) हरो क्यों रो रही थी?
- (घ) लोग वैद्य जी को 'लुकमान' क्यों समझते थे?



जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- (क) लाजवंती तीर्थयात्रा पर क्यों न जा सकी?
.....
- (ख) लाजवंती की व्याकुलता का क्या कारण था?
.....
- (ग) अपनी वास्तविक अवस्था को कौन छिपा रहा था और क्यों?
.....
- (घ) लाजवंती ने हरो के दुःख को किस प्रकार ग्रहण किया?
.....

3. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

- (क) लाजवंती ने वैद्य जी को भेंट की-

☐ चवन्नी

☐ इकन्नी

☐ अठन्नी

☐ दवन्नी

- (ख) वैद्य जी ने मियादी बुखार की अवधि कितने दिन की बताई।

☐ पंद्रह दिन की

☐ इक्कीस दिन की

☐ दस दिन की

☐ एक सप्ताह की

- (ग) लाजवंती ने हरो को रुपए लाकर दिए।

☐ सौ

☐ पाँच सौ

☐ दो सौ

☐ तीन सौ



4. दिए गए शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।

- (क) व्याकुलता -
- (ख) अंतिम -
- (ग) स्वप्न -
- (घ) अपेक्षा -



Critical Thinking

5. दहेज प्रथा मानवता के लिए एक अभिशाप है? कैसे? लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. यदि लाजवंती हरो के दुःख का निवारण न करती तो क्या हरो समाज में दहेज प्रथा जैसी कुरीति का विरोध कर पाती? हाँ तो कैसे? नहीं तो क्यों नहीं? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....



9. दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए।

(क) ईमानदारी	-		(ख) ठंड	-	
(ग) प्यास	-		(घ) चिंता	-	
(ङ) जोश	-		(च) नियम	-	
(छ) नगर	-		(ज) काँटा	-	

10. दिए गए मुहावरों का अर्थ सहित वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) आँखों का तारा	-	
(ख) अँधेरे घर का उजाला	-	
(ग) आँसू पोंछना	-	
(घ) गंगा नहाना	-	

11. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों में प्रयुक्त कारक का नाम लिखिए।

(क) बालक ने अपने पिता को जोर-जोर से पुकारा -	
(ख) हे राम! तेरा ही सहारा है।	-
(ग) युवती ने वैद्य को अठन्नी भेंट की।	-
(घ) हरो ने लाजवंती को वास्तविकता बताई।	-

12. दिए गए शब्दों की संधि कीजिए।

(क) दया + आनंद -		(ख) नै + इका	-	
(ग) सदा + एव -		(घ) पर + उपकार	-	





जरा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

13. लाजवंती की जगह आप होते तो हरो के साथ कैसा व्यवहार करते? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

14. समाज से किन प्रथाओं को जड़ से मिटाने की आवश्यकता है? प्रत्येक प्रथा का नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....



जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

15. त्याग की भावना व्यक्तित्व को महान बनाती है। आप अपने व्यक्तित्व से किस बुराई का त्याग करना चाहेंगे?

